[श्री शरद यादव]

संविधान का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाय ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री शरद यादव : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं ।

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL*

(Amendment of articles 352, 356 etc.)

SHRI HARI VISHNU KAMATH (Hoshangabad): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: I introduce the Bill.

15.37 hrs.

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL—*contd.*

(Amendment of article 51) by Shri Hari Vishnu Kamath

MR. DEPUTY-SPEAKER: We now take up further consideration of the following motion:

"That the Bill further to amend the Constitution of India, be taken into consideration."

श्री शंकर देव (बीदर) : माननीय उपाध्यक्ष जी, जय जगत ।

मैं माननीय कामथ साहब को, जिन्होंने इस बिल को इन्ट्रोड्यूस किया है, बधाई देना चाहता हूं : यह ऐसा बिल है, जिसके बारे में न केवल हमारे देश को, बल्कि सारी दुनिया को सोचना पड़ेगा ।

उपाध्यक्ष जी, कुछ दिन पहले महान वैज्ञानिक "एलबर्ट आइन्स्टीन" यहां आये थे । उन के पास कुछ प्रेस रिपोरटर्स गये । चूंकि वह महान वैज्ञानिक थे, उन्होंने एटम बम के निर्माण में बहुत कुछ सहयोग दिया था, इसलिए प्रेस रिपोटर्स ने उन से पूछा—"महाशय, यह बतलाइये, पहले विश्व युद्ध में हवाई जहाज का एक अस्त्र के रूप में अन्वेषण हुआ, दूसरे विश्व युद्ध में एटम बम कएक अस्त्र के रूप में आया, अब यदि तीसरा विश्व युद्ध हो तो उस के अन्दर कौन सा भयंकर अस्त्र पैदा होने वाला है ? "श्री आइन्स्टीन ने कहा—"यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो उस में कौन सा अस्त्र होगा, यह तो मैं नहीं बतला सकता, लेकिन यदि चौथा विश्व युद्ध होगा, तो मैं बतला सकता हूं कि उस समय कंकड़, पत्थर या पाषाण युग के अस्त्रों का प्रयोग होगा ।" उन के कहने का तात्पर्य था—यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो सब का सत्यानाश हो जाएगा, मानवता बच नहीं सकेगी, सभ्यता, संस्कृति, ह्यूमन सिविलाईजेशन—सब का सत्यानाश हो जाएगा और उस के बाद हम को पषाण युग की सभ्यता का निर्माण करना पड़ेगा ।

उपाध्यक्ष महोदय, आज सब से बड़ी समस्या यह है कि हमारा विज्ञान, जो तरक्की कर रहा है, वह मानव की सेवा के लिए बढ़ रहा है, लेकिन साथ साथ मानव को समाप्त करने का कारण भी बनता जा रहा है । ऐसी स्थिति में जब तक सारे विश्व के लोग एक जगह बैठ कर इन अस्त्र-शस्त्रों पर रोक नहीं लगायेंगे, तब तक मानव जाति बच

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, Section 2, dated 20-4-78.